All over the world Democracy means the rule of the majority. But in India, 85% people are ruled by 10 to 15% upper castes.

– Saheb Kanshiram

Blue Diary : Kanshiram Special

Ambedkar Phule World Digital Publications

कांशीराम से जुडी महत्वपूर्ण बातें

साहब कांशी राम का जन्म 15 मार्च 1934 को अपने नैनिहाल पिरथी पुर बुंगा साहिब, जिला रोपड़, पंजाब में हुआ था. उनकी माता का नाम बिशन कौर और पिता का नाम सरदार हरी सिंह था. उनका पैतृक गाँव खुआसपुर, जिला रोपड़ था जो की रोपड़ से 3 किलोमीटर की दुरी पर आनंद पुर साहिब रोड पर स्थित है.

B.Sc रोपड़ से करने के बाद नौकरी के लिए पहले वो देहरादून, उत्तराखंड फिर पूना, महाराष्ट्र पहुँचे जहां बतौर वैज्ञानिक नियुक्त हुए. यहीं पर 1964 में बाबासाहब आंबेडकर और महात्मा बुद्ध की छुट्टियों को ब्राह्मणवादी अधिकारीयों द्वारा रद्द किये जाने को लेकर विवाद खड़ा हो गया. दीना भाना नाम के राजस्थान के एक कर्मचारी ने इसके खिलाफ आवाज़ उठाई तो उसे बर्खास्त कर दिया गया. साहिब कांशी राम ने आगे आकर दीना भाना की मदद की और अदालत में मुक़दमा किया. दोनों छुट्टियों को बहाल करवाया और दीना भाना को नौकरी में वापस लिया गया.

पंजाब के एक चर्चित विधायक की बेटी का रिश्ता आया लेकिन आंदोलन के हित में उसे ठुकरा दिया.

कांशीराम जी की पहली ऐतिहासिक किताब 'द चमचा ऐज' (अंग्रेजी) 24 सितंबर 1982 को प्रकाशित हुआ.

पे बैक टू सोसाइटी के सिद्धांत के तहत बहुजन कर्मचारियों को उन्होने अपने वेतन का 10वां हिस्सा समाज को लौटाने का आह्वान किया. मतलब की समाज की भलाई के लिए खर्च करने के लिए.

कांशीराम जी सबसे पहले बाबा साहेब द्वारा स्थापित पार्टी रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया के सक्रिए सदस्य बनें. बाबासाहब आंबेडकर के 1956 में जाने के बाद उनके द्वारा बनाई गई Republican Party of India उनकी विरासत पर काबिज थी. कांशीराम साहब ने पहले कुछ साल उनके साथ काम किया और बाबासाहब के आंदोलन के बारे में जानने की कोशिश की. लेकिन जल्द ही उन्हें समझ आ गया कि RPI के नेता बाबासाहब के आंदोलन को चलाने से ज़्यादा, अपने निजी स्वार्थों को ही पूरा करने में लगे हुए थे. वो RPI को इस लायक नहीं बना पाये कि उसे राजनीतिक सफलता मिल सके और नतीजा यह हुआ कि जो समाज बाबासाहब के कंधे से कंधा मिलाकर ब्राह्मणवाद से लोहा ले रहा था, उसमें भी निराशा छा गयी और वो इस आंदोलन से दूर होता चला गया. जब साहब कांशी राम ने RPI के नेताओं से बात करनी चाही कि आप इस आंदोलन को क्यों नहीं चला रहे तो उन्होंने जवाब में कहा कि बाबासाहब की विचारधारा तो अच्छी है, लेकिन कामयाब "होउ शकत नाही" (हो नहीं सकती). उन्होंने सारा भांडा समाज के सर फोड़ दिया. साहब ने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की कि अगर आप पूरी ईमानदारी के साथ काम करें, तो यह आंदोलन आज बाबासाहब के समय से भी ज़्यादा कामयाब हो सकता है क्योंकि अब हमारे समाज की आर्थिक और सामाजिक स्थिति मज़बूत हुई है. लेकिन उनके खुद के अनुसार महाराष्ट्र में चल रही "होउ शकत नाही" लहर काफी मज़बूत हो चुकी थी और आखिरकार उन्होंने भारत में किसी और जगह से इस आंदोलन को दुबारा अपने पैरों पर खड़ा करने पर सोचना शुरू किया.

बीएससी की डिग्री हासिल करने के बाद कांशीराम ने हाई एनर्जी मैटिरियल्स रिसर्च लैबोरेटरी ज्वाइन किया और डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन (डीआरडीओ) का हिस्सा बन गए.

डीआरडीओ से जुड़ने के कुछ समय बाद ही कांशीराम ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ शेड्यूल्ड कास्ट/ट्राइब्स बैकवर्ड क्लास एंड माइनॉरिटी एंप्लाइज वेलफेयर एसोसिएशन के आंदोलन

से जुड़े. यह समूह बाबा साहब अंबेडकर के जन्मदिन पर छुट्टी घोषित करने की मांग कर रहा था.

1965 में ही कांशीराम ने अनुसुचीत जाति और पीछडो के लिए लड़ाई लडनी शुरू की थी. इसके बाद उन्होंने भारत की जाति व्यवस्था के बारे में पढ़ना और समजना शुरू किया .

कांशीराम ने उत्तर भारत का रुख किया. उन्होंने महाराष्ट्र में RPI के असफल होने के कारणों पर बहुत बारीकी से खोजबीन की और बहुत सारे कारण ढूंढे. उनके अनुसार बाबासाहब अम्बेडकर का आंदोलन "Dynamic" यानि समय के साथ बदलने वाला था. बाबासाहब ने पहले Independent Labour Party बनाई, फिर Scheduled Caste Federation और अंत में RPI. इसी तरह उनकी पत्रिकाओं के नाम भी मूकनायक, बहिष्कृत भारत, जनता और प्रबुद्ध भारत रहे, जो समय की ज़रूरतों के हिसाब से बदलते रहे. लेकिन उनके बाद RPI को चलाने वाले नेता इस आंदोलन को "Dynamic" नहीं बना पाये. दूसरा बड़ा कारण उनकी खोज में उभर कर आया कि बाबासाहब के आंदोलन को देश के छह अलग भागों में अनुसूचित जाति के लोग चला रहे थे, लेकिन यह सिर्फ एक ही जाति तक सीमित थे. चुनावों में हार-जीत वोटों के आधार पर होती है, इसलिए सिर्फ एक ही जाति तक सीमित आंदोलन राजनीति में कामयाब नहीं हो सकते. इसके अलावा और भी कई कारण थे, जैसे ईमानदार और सूझवान नेताओं की कमी, गैर राजनीतिक जड़ों का मज़बूत नहीं होना इत्यादि.

महापरिनिर्वाण

- 2003 में लकवाग्रस्त होने के बाद सक्रिय राजनीति से दूर चले गए.
- 9 अक्टूबर, 2006 को हार्टअटैक, दिल्ली में अंतिम सांस ली.

कांशीराम ने निम्नलिखित पत्र-पत्रिकाएं शुरू की

- अनटचेबल इंडिया (अंग्रेजी)
- बामसेफ बुलेटिन (अंग्रेजी)
- आप्रेस्ड इंडियन (अंग्रेजी)
- बहुजन संगठनक (हिन्दी)
- बहुजन नायक (मराठी एवं बंग्ला)
- श्रमिक साहित्य
- शोषित साहित्य
- दलित आर्थिक उत्थान
- इकोनोमिक अपसर्ज (अंग्रेजी)
- बहुजन टाइम्स दैनिक
- बहुजन एकता

जीवन परिचय और इतिहास

कांशीराम का मानना था कि अछूत और दूसरी पिछड़ी जातियों की संख्या भारत की जनसंख्या की 85 फ़ीसदी है, लेकिन 15 फ़ीसदी सवर्ण जातियाँ उन पर शासन कर रही हैं. उन्होंने बहुजन समाज पार्टी तो बना ली, लेकिन विधानसभा और लोकसभा चुनावों में जीत दर्ज कर पाना इतना आसान नहीं था.

जाति के भेदभाव में गले तक डूबे समाज और नेता जहां जाति उन्मूलन की बात करते रहे कांशीराम ने खुलकर जाति की बात की. वो भी बड़े तल्ख तेवर के साथ. '**तिलक, तराजू और तलवार, इनके मारो जूते चार**' या '**ठाकुर बामन बनिया चोर, बाकी सब हैं डीएसफोर**' जैसे नारे हों या आर्यावर्त को

चमारावर्त बनाने की बात, कांशीराम नें ठीक वहीं पर चोट की जहां सबसे ज्यादा दर्द हो.

अपने समाचार पत्र 'बहुजन संगठक' के 5 अप्रैल 1982 के अंक में वे बताते हैं कि उन्होंने जब अम्बेडकर के आंदोलन का अध्ययन किया तो ये पाया कि बहुजन समाज इसीलिए अपने बलबूते कोई आंदोलन नहीं चला पाता है क्योंकि उसकी गैर राजनीतिक जड़ें मजबूत नहीं हैं.

इसीलिए उन्होंने सोचा कि एक ऐसा संगठन बनाना ज़रूरी है जो कि इन सब शोषित समाज की गैर राजनीतिक जड़ें मजबूत कर सके. यह रास्ता उत्तर प्रदेश में कामयाबी की मंजिलें हासिल करने लगा.

राजनीतिक दल के रूप में बहुजन समाज पार्टी से पहले कांशीराम ने पिछड़े, अछुतो, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों और कर्मचारियों के बीच डीएस4 के जरिये अपना आधार बनाया. कांशीराम ने शोषीत समाज के हक और हुकूक के लिए पहले डीएस-4, फिर बामसेफ और 1984 में एससी, एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यक समाज के वैचारिक नेताओं को जोड़कर बहुजन समाज पार्टी का गठन किया.

पहले खुद कांशीराम ने आगे बढ़कर बहुजन राजनीति की अगुवाई की और साथ-साथ मायावती को भी तैयार किया.

अलीगढ़ में रहने वाले कांशीराम के एक पूर्व सहयोगी अमृतराव अकेला बताते हैं, "1985 में जब बहुजन समाज पार्टी चुनाव लड़ रही थी तो कांशीराम ने कहा था कि **पहला चुनाव हम हारेंगे, दूसरे चुनाव में हराएंगे और तीसरे चुनाव में जीतेंगे.** उनका कहना था कि हम इस देश में बहुजन समाज को हुक्मरान बनाना चाहते हैं. लोकतंत्र में जिनकी संख्या ज़्यादा होती है उनको हुक्मरान होना चाहिए. इसीलिए उन्होंने एक नारा लगाया था **'जिसकी जितनी संख्या भारी, उतनी उसकी हिस्सेदारी', 'सवर्णो की बस्ती में स्कूल और दवाखानें, बहुजनो की बस्ती में शराबखानें नहीं चलेंगे, नही चलेंगे.'** उनका एक और नारा था **'जो बहुजन की बात करेगा, वो दिल्ली पर राज करेगा."**

कांशीराम ने 1988 में इलाहाबाद से लोकसभा का उपचुनाव लड़ा. वो जीते तो नहीं लेकिन विश्वनाथ प्रताप सिंह जैसे मज़बूत प्रतिद्वंदी के ख़िलाफ़ 68000 से अधिक वोट लेने में सफल रहे.

1991 में इटावा से उपचुनाव जीतने के बाद उन्होंने स्पष्ट किया कि चुनावी राजनीति में नये समीकरण का प्रारम्भ हो गया है.

कांशीराम को सबसे बड़ा राजनीतिक मास्टर स्ट्रोक था 1993 में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए मुलायम सिंह यादव की समाजवादी पार्टी के साथ चुनावी गठबंधन. इस गठजोड़ के ज़रिए वो भारतीय जनता पार्टी को उत्तरप्रदेश में उस वक्त चुनाव में हरा पाए, जबकि कोई कल्पना भी नहीं करता था कि भारतीय जनता पार्टी चुनाव में हारेगी, ख़ास तौर से बाबरी मस्जिद टूटने के बाद.

उसी उपल्ब्धि को धीरे धीरे उन्होंने कुशलता से आगे बढ़ाया. वही उपलब्धि बाद में विभिन्न घटनाक्रमों से गुज़रती और विकसित होती हुई 2007 में मायावती के पूर्ण बहुमत में परिणित हुई. मायावती का पूर्ण बहुमत नहीं बन सकता था अगर बहुजन थीसिस उसके पीछे नहीं होती. अगर मायावती को अति पिछड़ों और ग़रीब मुसलमानों ने वोट नहीं दिया होता, अगर मायावती को सौ अनुसुचीत जाती जनजाती में से कम से कम अस्सी ने वोट नहीं दिया होता तो ये सब मुमकीन नही था. पर बहुजन राजनीति सफल हो रही थी. जब बहुजन समाज का इतना बड़ा वोटबैंक बन चुका था, तो उसके दबाव में ऊँची जाति के भी कुछ लोगों ने उन्हें वोट दिया, क्योंकि वो भी सत्ता में हिस्सेदारी चाहते थे. इससे ये सुनिश्चियत हुआ कि वो अगर SC ST OBC वोटों पर अपनी पकड़ बनाए रखें और उन्हें ऊँची जातियों को थोड़ा-सा वोट भी मिल जाए तो वो सरकार बना सकती हैं.

लेकिन बाद में इन्हीं कांशीराम ने बिना पलक झपकाए समाजवादी पार्टी की धुर विरोधी भारतीय जनता पार्टी के साथ दो बार साझा सरकार बनाई और कांग्रेस के साथ भी

चुनावी गठबंधन किया. नतीजा ये रहा कि उनके ऊपर अवसरवाद के आरोप लगे.

जिसको लोग नीची निगाह से कहते हैं अवसरवाद, कांशीराम की निगाह में वो एक ख़ूबी थी. **कांशीराम गर्व से कहते थे कि हम अवसरवादी हैं.** समाज की भलाई मे भला क्या अवसरवाद और नीची निगाह??

उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के साथ कभी मिल कर चुनाव नहीं लड़ा. भारतीय जनता पार्टी हमेशा कांशीराम से गठजोड़ करने के लिए मजबूर हुई और उन्होंने अपने गठजोड़ के ज़रिए भारतीय जनता पार्टी को पराजित किया. **भाजपा के हमेशा ज़्यादा विधायक होते थे लेकिन उसके बावजूद भाजपा को मानना पड़ता था कि बसपा का मुख्यमंत्री होगा.** इससे आप अंदाज़ा लगाइए कि उस राजनीति में कांशीराम का हमेशा अपरहैंड होता था और 170 सीटें जीतने वाली भारतीय जनता पार्टी बैक फ़ुट पर रहती थी. **दरअसल उन्होंने जितनी बार भारतीय जनता पार्टी से हाथ मिलाया, उतनी बार वो कमज़ोर हुई.**

जब उन्होंने कांग्रेस से अनुसुचीत जाति के वोट छीन लिए थे तब कांशीराम ने एक प्रसिद्ध वाक्य था, **'अभी तक मैं कांग्रेस की तरफ़ ध्यान दे रहा था. अब वो नष्ट हो गई है. अब मैं भारतीय जनता पार्टी की तरफ़ ध्यान दूँगा.'**

अटल बिहारी वाजपेई ने उनसे एक बार राष्ट्पति बनने की पेशकश की थी, लेकिन उन्होंने कहा कि वो प्रधानमंत्री बनना पसंद करेंगे. राष्ट्रपति बना कर आप हमें चुपचाप अलग बैठा दीजिए, ये हमे मंजुर नही है. वो सत्ता का डिस्ट्रीब्यूशन चाहते थे. वो पंजाबी के गुरूकिल्ली शब्द का इस्तेमाल करते थे, जिसका अर्थ था सत्ता की कुंजी.

ताला खोलने के लिए चाहिए चाबी. पंजाबी में कहें तो किल्ली. और हर तरह का ताला खोले वो है गुरकिल्ली, मास्टर की. बहुजनो को ये चाबी कांशीराम ने थमाई. इसके पहले ये था कि कांग्रेस ब्राह्मणों, SC, ST, पीछडो और मुसलमानों के वोट पाकर सत्ता में पहुंचती थी. सत्ता के शीर्ष पर कोई ब्राह्मण या ठाकुर बैठता था. कुछ SC, ST, पीछडो और मुसलमानों को कैबिनेट में एडजस्ट कर लिया जाता था. इसी एडजस्टमेंट की सीढ़ी चढ़ते चढ़ते जो सबसे ऊपर पहुंचे वह थे बाबू जगजीवन राम. उसके बाद कांग्रेस में कोई SC नेता इतना ऊपर नहीं चढ़ पाया. मगर जब जगजीवन राम अपनी राजनीति के आखिरी दांव चल रहे थे. तब मान्यवर कांशीराम जी सरकारी मुलाजिम नौकरी छोड़ कभी साइकिल कभी बस से सफर कर एक मूवमेंट खड़ा कर रहे थे.

कांशीराम का मानना था कि ताकत पाने के लिए स्टेट पर कब्ज़ा ज़रूरी है. कांग्रेस के साथ जुड़े SC नेताओं को वो चमचा नेता कहते थे, जिनको अगर पांच सीट भी दे दी जाए तो वो ख़ुश हो जाते थे.

कांशीराम ने ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई, झलकारीबाई और ऊदा देवी जैसे प्रतीकों को बहुजन चेतना का प्रतीक बनाया. उन्हें वो मान दिलाया कि किसी भी डिसकोर्स में प्रमुखता से याद किया जाना चाहिए, जो प्रथा बाद मे बहुजनो मे शुरु हो गई है. आज भी जारी है.

मान्यवर कांशीराम दो प्रकार के राष्ट्रवाद के सिद्धान्त की बात कहते थे. एक वो जो सताए जाते हैं उनका राष्ट्रवाद और दूसरे जो सताते हैं, उनका राष्ट्रवाद. उनका मानना था कि **अत्याचार करने और सताने वाले के लिए राष्ट्रवाद की परिभाषा सामंतवाद है, जबकि हमारे लिए राष्ट्रवाद भारत की जनता है.**

बहुजन समाज आंदोलन को उस समय बहुत बड़ा झटका लगा जब 2003 आते आते कांशीराम गंभीर रूप से बीमार हो गए. उस समय उनकी शिष्या मायावती ने उनका बहुत ख़्याल रखा.

एक बार जब वो ट्रेन से जा रहे थे तभी उनको ब्रेन हैमरेज हो गया. जब उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया तो उन्हें स्मृतिलोप हो चुका था. वो लोगों को पहचानते नहीं थे. फिर मायावती उन्हें अपने घर ले गई. मायावती उनका ख्याल एक बेटी जैसे अपने पीता का रखती है उसी तरह रखती थी.

ये उनकी राजनीतिक इंजीनियरिंग का ही फल था कि बहुजनों ने इतिहास मे पहली बार अकले ही सत्ता का स्वाद चखा.

टर्निंग पॉईंट

B.Sc रोपड़ से करने के बाद नौकरी के लिए पहले वो देहरादून, उत्तराखंड फिर पूना, महाराष्ट्र पहुँचे जहां बतौर वैज्ञानिक नियुक्त हुए. यहीं पर 1964 में बाबासाहब आंबेडकर और महात्मा बुद्ध की छुट्टियों को ब्राह्मणवादी अधिकारीयों द्वारा रद्द किये जाने को लेकर विवाद खड़ा हो गया. दीना भाना नाम के राजस्थान के एक कर्मचारी ने इसके खिलाफ आवाज़ उठाई तो उसे बर्खास्त कर दिया गया. साहिब कांशी राम ने आगे आकर दीना भाना की मदद की और अदालत में मुक़दमा किया. दोनों छुट्टियों को बहाल करवाया और दीना भाना को नौकरी में वापस लिया गया.

इस सारी घटना ने साहब कांशी राम को झकझोड़ कर रख दिया और समाज में अपने आप को ऊँची जाती का समझने वाले लोगों की घटिया मानसिकता से रूबरू करवाया. साहब के साथ महाराष्ट्र के डी.के.खापर्डे भी वैज्ञानिक के तौर पर काम करते थे; उन्होंने बाबासाहब द्वारा लिखी हुई "जाति का विनाश" किताब उन्हें पढ़ने को दी. साहब के अनुसार उसे पढ़ने के बाद वो पूरी रात सो न सके और उसे एक ही रात में कई बार पढ़ा. इससे उन्हें हज़ारों सालों से किस तरह ST, SC, OBC को जाति के कारण अन्याय-अत्याचार सहने पड़े हैं. के बारे में जानकारी मिली. देश में एक मानवतावादी समाज बनाने के लिए जाति एवं जाति व्यवस्था को खत्म करना कितना ज़रूरी है, इस बात का भी उन्हें अहसास हुआ. यहीं से साहब कांशी राम के जीवन ने एक नया मोड़ लिया और उन्होंने अपना पूरा जीवन देश में जाति पर आधारित इस गैर-बराबरी वाली व्यवस्था को खत्म कर, एक जाति-विहीन मानवतावादी व्यवस्था बनाने के लिये समर्पित करने का फैसला किया. उन्होंने अपने परिवार को सारा जीवन अपना घर न बसाने और कोई ज़मीन ज़ायदाद, बैंक बैलेंस न बनाने के अपने फैसले से अवगत करवाया.

कांशीराम का खत

महाराष्ट्र में आंदोलन अंबेडकर के चलते मजबूत था. साहित्य में, संगीत में, समाज में प्रतिरोध के कई स्वर थे. मगर कई अंतरविरोध भी थे. और कांशीराम के वक्त जो आंदोलन के अलंबरदार थे, वह बंटे हुए थे. इन सबको देख समझ कांशीराम ने अपनी योजना बनाई. और उसके लिए सबसे पहले लिखा एक खत. खुला नहीं, मुंदा. घरवालों को भेज दिया. पूरे 24 पन्ने का. इसमें उन्होंने लिखा था कि

- अब कभी घर नहीं आऊंगा.
- कभी अपना घर नहीं खरीदूंगा.
- गरीबों दलितों का घर ही मेरा घर होगा.
- सभी रिश्तेदारों से मुक्त रहूंगा
- किसी के शादी, जन्मदिन, अंतिम संस्कार में शामिल नहीं होऊंगा.
- कोई नौकरी नहीं करूंगा.
- जब तक बाबा साहब अंबेडकर का सपना पूरा नहीं हो जाता, चैन से नहीं बैठूंगा.

कांशीराम ने इन प्रतिज्ञाओं का पालन किया. यहा तक की वह अपने पिता के अंतिम संस्कार में भी शामिल नहीं हुए थे.
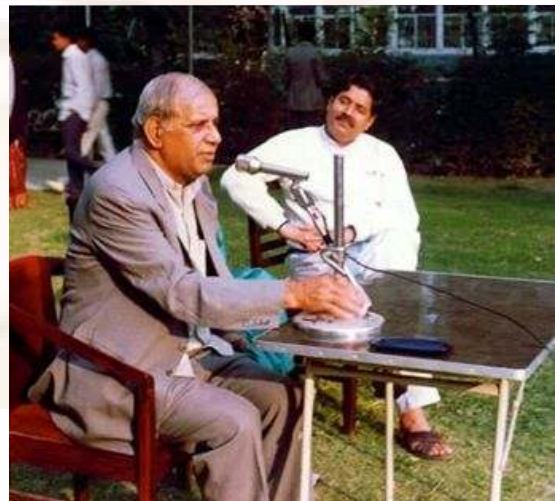
मान्यवर कांशीराम साहब की 05 पैसे की कहानी – प्रेरक प्रसंग

लेखक – दीपक कुमार

सन 1972 में हमने पूना में अपना छोटा सा कार्यालय खोला . शायद बहुजन समाज मूमेंट का वो पहला कार्यालय था . मैं उस समय रेलवे में नौकरी करता था .

नौकरी के लिए मुझे रोज पूना से मुंबई जाना पड़ता था .

साहब जी मेरे साथ मुंबई आना जाना करते थे. उस वक्त रेल के डिब्बे में ही हम योजनाएँ बनाते थे. साहब जी के पास पूना से मुंबई का रेलवे पास था.हम अपनी साइकलों पर पूना स्टेशन जाते थे और फिर मुँबई से आकर साइकल से कार्यलय पहुचते थे. हम स्टेशन के पास वंदना होटल पर खाना खाते थे.

आज भी में उस दिन को याद करता हूँ जब मैं और साहब मुंबई से पूना आये और साइकल उठाकर चल पड़े .

उस दिन मेरे पास तो पैसे नही थे इसीलिए मैंने सोचा साहब जी खाना खिला देंगे मगर साहब भी नहीं बोले . मैंने सोचा की आज साहब का दूसरे होटल में खाना खाने का मूड है . वो होटल भी आ गया हम दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा और आगे चल पड़े क्योंकि पैसे किसी के पास नही थे .

हम दोनों रात को पानी पीकर सो गये . अगले दिन मेरी छुट्टी थी मगर साहब को मीटिंग के लिए जाना था | साहब सुबह उठे और नहा धो कर अटेची उठाकर निकलने लगे .थोड़ी देर बाद वापिस आये और बोले यार मनोहर कुछ पैसे है क्या तुम्हारे पास ? मैंने कहा नहीं है साहब . तो साहब ने कहा देख कुछ तो होंगे ? मैंने कहा कुछ भी नहीं है साहब .

"यार 05 पैसे तो होंगे "मैंने भी बैग में ढूंडा मगर नहीं मिले . मैंने पूछा क्या काम था साहब ? यार साइकल पंक्चर हो गयी है और ट्रेन का भी समय हो गया है . मैंने कहा तो क्या हुआ साहब आप मेरी साइकल ले जाओ ...! साहब ने कहा अरे भाई तेरे वाली भी खराब है . 5 पैसे ना होने के कारण साहब पैदल ही दौड़ गये ..

और पहली बार जब मैंने कांशीराम साहब को हेलिकोप्टर से उतरते देखा तो आँखों से आसूं निकल गये और मेरे मुँह से निकला "वाह साहब जी वाह…!"

साहेब कांशीराम और उनकी सादगी

एक समय 1970-71 की बात है. उन्हें सर्दी के मौसम में संगठन के कार्य के लिए जाना था. उनके पास पैसे नहीं थे. उसी समय एक कोट खरीदने की योजना बनाई. वे पुराने कपड़ों के बाजार में पहुंचे. पुराने कोट पर भी वे अधिक पैसे बर्बाद नहीं करना चाहते थे. दुकानदार से और सस्ता कोट दिखाने को कहा.

उसने व्यंग्य करते हुए कहा कि पास के मुर्दाघाट में एक डोम मुर्दों के कपड़े बेचता है. इससे सस्ता तो वहीं मिलेगा.

कांशीराम साहब बिना कुछ सोचे मुर्दाघाट जा पहुंचे. वहां रखे मुर्दों के कोट में से एक कोट 5 रुपए में खरीदा और उसे पहन कर खुशी खुशी अपने मिशन पर निकल गये.

सादगी की ऐसी मिसाल किसी भी भारतीय राजनीतिज्ञ में ढूंढने से नहीं मिलेगी.

अत्याचारो पर उग्र स्वभाव

कांशीराम अनुसुचीत जाति के साथ हुई किसी ज़्यादती को बर्दाश्त नहीं कर पाते थे. कांशीराम पर एक किताब लिखने वाले एसएस गौतम बताते हैं, "एक बार कांशीराम रोपड़ के एक ढाबे में गए. वहां उन्होंने खाना खा रहे कुछ ज़मींदारों को शेख़ी बघारते हुए सुना कि किस तरह उन्होंने खेतों में काम कर रहे अछुतो को सबक सिखाने के लिए उनकी पिटाई की है. ये सुनना था कि कांशीराम का ख़ून खौल उठा और वो इतने आगबबूला हो गए कि उन्होंने एक कुर्सी उठाई और उससे ज़मीदारों को पीटने लगे. इस चक्कर में कई मेज़ें पलट गईं और उन पर रखी सभी प्लेटें चकनाचूर हो गईं."

मायावती का मीशन मे प्रवेश

1977 की एक सर्द रात ग्यारह बजे जैसे ही मायावती ने खाना खाने के बाद पढ़ना शुरू किया, उनके दरवाज़े की कुंडी बजी.

जब मायावती के पिता प्रभुदयाल दरवाज़ा खोलने आए तो उन्होंने देखा कि बाहर मुड़े-तुड़े कपड़ों में, गले में मफ़लर डाले, लगभग गंजा हो चला एक अधेड़ शख़्स खड़ा था. उन्होंने अपना परिचय देते हुए कहा कि वो कांशीराम हैं और बामसेफ़ के अध्यक्ष हैं. वो मायावती को एक भाषण देने के लिए आमंत्रित करने आए हैं.

उस समय मायावती दिल्ली के इंदरपुरी इलाके में रहा करती थीं. उनके घर में बिजली नहीं होती थी. वो लालटेन की रोशनी में पढ़ रही थीं. कांशीराम की जीवनी कांशीराम 'द लीडर ऑफ़ दलित्स' लिखने वाले बद्री नारायण बताते हैं, "कांशीराम ने मायावती से पहला सवाल पूछा कि वो क्या करना चाहती हैं. मायावती ने कहा कि वो आईएएस बनना चाहती हैं ताकि अपने समुदाय के लोगों की सेवा कर सकें."

"कांशीराम ने कहा तुम आईएएस बन कर क्या करोगी? मैं तुम्हें एक ऐसा नेता बना सकता हूँ जिसके पीछे एक नहीं, दसियों कलेक्टरों की लाइन लगी रहेगी. तुम सही मायने में तब अपने लोगों के ज़्यादा काम आ सकती हो. उन्होंने मायावती के पिता से कहा कि वो अपनी बेटी को संगठन में काम करने के लिए उन्हें दे दें. प्रभुदयाल ने बात को टालने की कोशिश की. लेकिन मायावती की समझ में आ गया कि उनका आगे का भविष्य कहां है, हांलाकि उनके पिता इसके सख़्त ख़िलाफ़ थे."

मायावती ने अपने पिता की बात नहीं मानी. यहां तक कि उन्होंने अपना घर छोड़ दिया और पार्टी आफ़िस में आ कर रहने लगीं. मायावती की जीवनी लिखने वाले अजय बोस अपनी किताब बहनजी में लिखते हैं, "मायावती ने स्कूल अध्यापिका के तौर पर मिलने वाले वेतन के पैसों को उठाया जिन्हें उन्होंने जोड़ रखा था, एक सूटकेस में कुछ कपड़े भरे और उस घर से बाहर आ गईं जहां वो बड़ी हुई थीं."

बद्री नारायण बताते हैं कि मायावती ने वर्णन किया है कि उस समय उनके क्या संघर्ष थे. लोग उनके बारे में क्या सोचते थे. एक लड़की का घर छोड़ कर अकेले रहना उस समय बहुत बड़ी बात होती थी. वो असल में किराए का एक कमरा ले कर रहना चाहती थीं. लेकिन इसके लिए उनके पास पर्याप्त पैसे नहीं थे. इसलिए पार्टी आफ़िस में रहना उनकी मजबूरी थी.

'मिले मुलायम-कांशीराम , हवा हो गए जय श्रीराम.'

कांशी राम ने एक साक्षात्कार में कहा कि यदि मुलायम सिंह से वे हाथ मिला लें तो उत्तर प्रदेश से सभी दलों का सुपड़ा साफ हो जाएगा.

मुलायम सिंह को उन्होंने केवल इसीलिए चुना क्योंकि वही बहुजन समाज के मिशन का हिस्सा था. इसी इंटरव्यू को पढ़ने के बाद मुलायम सिंह यादव दिल्ली में कांशीराम से मिलने उनके निवास पर गए थे.

उस मुलाक़ात में कांशीराम ने नये समीकरण के लिए मुलायम सिंह को पहले अपनी पार्टी बनाने की सलाह दी और 1992 में मुलायम सिंह ने समाजवादी पार्टी का गठन किया.

1993 में समाजवादी पार्टी ने 256 सीटों पर और बहुजन समाज पार्टी ने 164 सीटों पर विधानसभा के लिए चुनाव लड़ा और पहली बार उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज की सरकार बनाने में कामयाबी भी हासिल कर ली.

उस वक़्त एक तरफ बाबरी मस्जिद को ढाहने और उसकी जगह पर मंदिर बनाने के लिए अड़े भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता 'जय श्री राम' का नारा लगा रहे थे.

लेकिन गठबंधन की सरकार से उत्साहित होकर बहुजन कार्यकर्ताओं ने नारा लगाया- 'मिले मुलायम-कांशीराम , हवा हो गए जय श्रीराम.'

चमचों की पहचान

कांशीराम का मानना था कि जब-जब कोई बहुजन व्यक्ति संघर्ष से मनुवाद को अभूतपूर्व चुनौती देते हुए सामने आता है, तब-तब ब्राह्मण वर्चस्व वाले राजनीतिक दल, जिनमें कांग्रेस भी शामिल है, उनके अनुसुचीत जाति के नेताओं को सामने लाकर आंदोलन को कमज़ोर करने का काम करते हैं. ऐसा क्यों, इसके लिए कांशीराम ने लिखा, 'औज़ार, दलाल, पिट्ठू अथवा चमचा बनाया जाता है सच्चे, खरे योद्धा का विरोध करने के लिए. जब खरे और सच्चे योद्धा होते हैं चमचों की मांग तभी होती है. जब कोई लड़ाई, कोई संघर्ष और किसी योद्धा की तरफ से कोई ख़तरा नहीं होता तो चमचों की ज़रूरत नहीं होती, उनकी मांग नहीं होती. प्रारंभ में उनकी उपेक्षा की गई. किंतु बाद में जब बहुजन वर्गों का सच्चा नेतृत्व सशक्त और प्रबल हो गया तो उनकी उपेक्षा नहीं की सजा सकी. इस मुक़ाम पर आकर, ऊंची जाति के हिंदुओं को यह ज़रूरत महसूस हुई कि वे पीछडे वर्गों के सच्चें नेताओं के ख़िलाफ़ चमचे खड़े करें.'
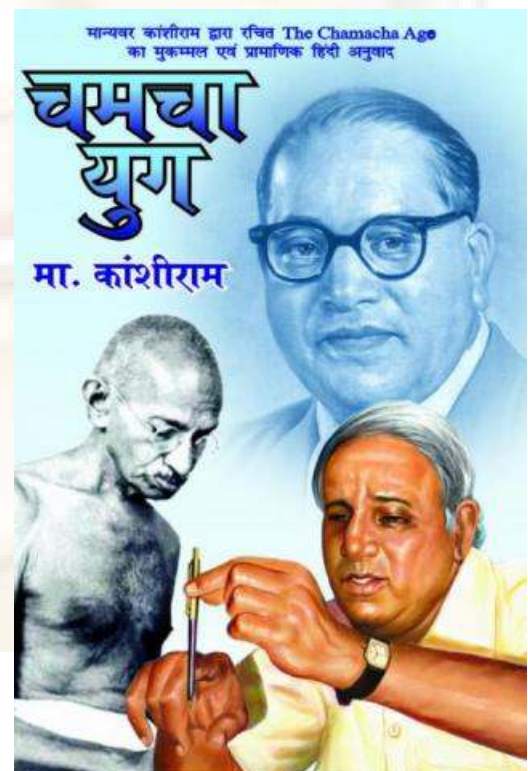
8 मार्च, 1987 को कांशीराम ने पत्रकार निखिल लक्ष्मण को दिया इंटर्व्यू

प्रश्न- आप सभी राजनीतिक दलों के प्रति इतने विरोधी क्यों हैं, विशेषकर कम्युनिस्टों के?

उत्तर- मेरे विचार में सभी पार्टियां यथास्थिति की पोषक हैं. हमारे लिए राजनीति है बदलाव की राजनीति. मौजूदा पार्टियां यथास्थिति को बने रहने का कारण है. यही कारण है कि पिछड़ी जातियों को आगे बढ़ाने का काम नहीं हुआ है. कम्युनिस्ट पार्टियां इस मामले में सबसे बड़ा रोड़ा साबित हुई हैं. वे परिवर्तन की बात करती हैं लेकिन काम यथास्थिति के लिए करती हैं. बीजेपी बेहतर है कम-से-कम यह बदलाव की बात कभी नहीं करते, इसलिए लोग धोखे में नहीं रहते. कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टियां गरीबी दूर करने की बात करती हैं लेकिन काम गरीबी बनाये रखने का करती हैं. यदि गरीब, गरीब नहीं रहेगा तो ये लोग (यथास्थितिवादी) गद्दी पर नहीं बैठ पाएंगे.

प्रश्न- आपका कैडर महात्मा गांधी का इतना विरोधी क्यों है?

उत्तर- गांधी सभी बुराइयों की जड़ हैं. मैं बदलाव चाहता हूं. डॉ. अम्बेडकर बदलाव चाहते थे लेकिन गांधी यथास्थिति के रखवाले थे. वह शूद्रों को हमेशा शूद्र बनाए रखना चाहते थे. गांधी ने राष्ट्र को बांटने का काम किया लेकिन हम राष्ट्र को संगठित करने का कार्य कर रहे हैं, हम सभी बनावटी बंटवारों को मिटा देंगे.

प्रश्न- आप जातिवादी संगठन खड़ा करके जातिवाद को कैसे मिटा सकते हैं?

उत्तर- बीएसपी जातिवादी पार्टी नहीं है. यदि हम 6000 जातियों को जोड़ रहे हैं तो हम जातिवादी कैसे हो सकते हैं?

प्रश्न- मुझे लगता है कि उच्च जातियों के लिए आपकी पार्टी के दरवाजे बन्द हैं?

उत्तर- उच्च जातियां कहती हैं कि आप हमें शामिल क्यों नहीं करते. मैं कहता हूं कि आप सभी पार्टियों का नेतृत्व कर रहे हैं. यदि आप हमारी पार्टी में शामिल होंगे तो आप यहां भी बदलाव रोक दोगे. उच्च जातियां हमारी पार्टी में शामिल हो सकती हैं लेकिन वे इसके नेता नहीं हो सकते. नेतृत्व पिछड़ी जातियों के हाथों में ही रहेगा. मुझे डर है कि जब उच्च जातियों के लोग हमारी पार्टी में आएंगे तो वे बदलाव की प्रक्रिया को रोकेंगे. जब यह डर समाप्त हो जाएगा तो वे हमारी पार्टी में शामिल हो सकते हैं.

प्रश्न- जिन राजनीतिज्ञों से हमने दिल्ली में बात की वे कहते हैं कि यदि बीएसपी ने अपना ज्यादा लड़ाकूपन दिखाया तो वे राजनीति में खत्म कर देंगे.

उत्तर- हम उनको खत्म कर देंगे. क्योंकि जब इन्दिरा एक चमार के द्वारा खत्म की जा सकती है तब ये क्या बच सकते हैं. जब हम सशस्त्र सेनाओं में 90 फीसदी हैं, बीएसएफ में 70 फीसदी हैं, 50 फीसदी सीआरपीएफ और पुलिस में हैं तो हमारे साथ कौन अन्याय कर सकता है. एक जनरल के लिए जवानों की तुलना में कम गोलियां चाहिए. उनके पास जनरल हो सकते हैं, जवान नहीं.

प्रश्न- इसका अर्थ है आप हिंसा का प्रचार कर रहे हैं?

उत्तर- मैं शक्ति का प्रचार कर रहा हूं. हिंसा को रोकने के लिए मेरे पास शक्ति होनी चाहिए. उदाहरण के लिए, मेरे अलावा शिवसेना को कोई नहीं पछाड़ सकता, जब कभी मैं महाराष्ट्र आऊंगा मैं उनको खत्म कर दूंगा. शिवसेना की हिंसा खत्म हो जाएगी.

प्रश्न- आप ऐसा किस प्रकार करेंगे?

उत्तर- शिवसेना में कौन लोग हैं जो आग लगाते हैं और तोड़-फोड़ करते हैं. वे चार जातियां हैं-; अगाड़ी, भण्डारी, कोली और चमार. ये अनुसूचित जाति, जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्ग के लोग हैं. जब मैं महाराष्ट्र आऊंगा ये लोग मेरे पास आ जाएंगे.

प्रश्न- आप कैसे मानते हैं कि यूपी में बीएसपी का हश्र आरपीआई की शासक पार्टियों के साथ सौदेबाजी की ताकत की तरह खात्मा नहीं होगा?

उत्तर- आरपीआई ने कभी सौदेबाजी नहीं की. यह तो मांगने वाली पार्टी थी. यह सौदेबाजी करने के स्तर तक कभी नहीं पहुंची. मुझे याद है 1971 के आम चुनावों में 521 सीटों के लिए चुनावी समझौता हुआ, जिसमें 520 सीटों पर कांग्रेस चुनाव लड़ी तथा बाकी एक पर आरपीआई. मुझे आरपीआई प्यारी है लेकिन इससे तुलना करने में मुझे घृणा है. यह एक ऐसी वेश्या है जो कौड़ियों में बिकती है. जब तक मैं जिन्दा हूं ऐसा बीएसपी के साथ कभी नहीं होगा.

हम बदलाव चाहते हैं. हम यथास्थिति वाली ताकतों से गठजोड़ नहीं चाहते. यदि सरकार हमारे सहयोग के बगैर नहीं बन सकती तो बदलाव की हमारी अपनी शर्तें होंगी. हम आधारभूत तथा ढांचागत बदलाव चाहते हैं बनावटी नहीं.

प्रश्न- आपके फंड के स्रोत के पीछे कुछ रहस्य है?

उत्तर- मेरे पास फंड विभिन्न स्रोतों से आते हैं जो कभी खत्म नहीं होंगे. मेरा फंड ऐसे लोगों से आता है जो दौलत पैदा करते हैं. बहुजन समाज दौलत पैदा करता है. मैं उन्हीं से पैसा लेता हूं. लाखों लोग त्योहारों जैसे कुम्भ मेला इत्यादि पर करोड़ों रुपये खर्च करते हैं, केवल अगला जन्म संवारने के लिए. कांशीराम उनको बताता है कि मैं अगले जन्म के बारे में कुछ नहीं जानता लेकिन मैं वर्तमान जीवन का विशेषज्ञ हूं. मैं कहता हूं जिनको अगला जन्म संवारना है वे गंगा के किनारे ब्राह्मणों के पास जाओ, जिनको वर्तमान जीवन सुधारने में रुचि है वे मेरे पास आएं. इसलिए वे मेरी मीटिंगों के लिए दौड़ते हैं.

प्रश्न- वे कहते हैं कि आपने लखनऊ रैली पर बहुत पैसा खर्च किया है.

उत्तर- केवल बसों को किराये पर लेने के लिए ही 22 लाख रुपये खर्च किये गये. लेकिन मैं नाराज हूं. ये 22 करोड़ होने चाहिए थे. एक समय आएगा जब मेरे आह्वान पर 22 करोड़ तक लोग खर्च करेंगे. मेरे लिए पैसों की कोई कमी नहीं है. यदि खजाने से पैसा आता तो ये खाली हो जाता, मैं लगातार चलने वाले स्रोत से पैसा ले रहा हूं. मुझे सभी 542 लोकसभा की सीटों को जीतने के लिए केवल 1 करोड़ रुपया चाहिए. एक दिन वोटर कांशीराम को पैसा देने के लिए लाइन में खड़े होंगे, अगले दिन वे कांशीराम को वोट देने के लिए लाइन लगाएंगे.

प्रश्न- आपकी पार्टी से कुछ लोग पार्टी छोड़कर चले गए?

उत्तर- आप सभी लोगों को एक साथ नहीं रख सकते. कुछ लोग थक सकते हैं. कुछ को खरीदा जा सकता है. कुछ डर सकते हैं ऐसा लगातार चलता रहेगा. इससे हम हतोत्साहित नहीं होंगे. मैंने एक ऐसा तरीका ईजाद (ढूंढा) किया है कि यदि किसी समय पर 10 आदमी छोड़कर जाते हैं तो हम उसी स्तर के 110 लोग तैयार कर लेंगे. जिनको हमने 'डेडवुड' (मृतकाठ) करके अलग किया है, उसी 'मृत काठ' को दूसरे

जलाकर कुछ आग पैदा कर रहे हैं. वे उनको हमारे विरुद्ध प्रयोग करने की कोशिश कर रहे हैं.

प्रश्न- आप किस प्रकार के बदलाव की ओर देख रहे हैं?

उत्तर- मैं अस्थायी बदलाव नहीं चाहता. मैं ऐसा कुछ नहीं चाहता जो टिकाऊ न हो. हम जो कर सकते हैं करेंगे लेकिन ये बरकरार रहना चाहिए और स्थायी बदलाव के द्वारा बरकरार रहना चाहिए.

Interview of Kanshi Ram by Dilip Awasthi and Javed M. Ansari (December 31, 1993)

Q. Despite so many years in politics you still remain an enigma. Some callyou a Brahmin, others believe you are a former IAS officer while some are convinced that you are a Christian.

A. All this is a media manipulation. As many as 110 cover stories on me have appeared so far and you are still asking me this question. I am fed up of this question and will not answer it. If you want, you can refer to the old records or ask my workers outside.

Q. Why do you think the media should be against you?

A. Because the media is a creation of money. In fact, the biggest hurdles for the BSP and the downtrodden have been money, the mafia and the media. We lost 40 seats in Uttar Pradesh because of the media. Despite my denials, newspapers such as the Dainik Jagran kept saying that we did not want Muslim votes. In India 50 per cent of the media is pro-BJP, 35 per cent is pro-Congress(I) and the rest supports the other Brahminical parties like the Janata Dal, the CPI and the CPI(M).

Q. You keep attacking these parties but at the same time the SP-BSP Government in Uttar Pradesh is surviving purely on the strength of their support?

A. We have sought only an unconditional support. I had told both Prime Minister Rao and Janata Dal chief Bommai that in the first option I would like them to support the BJP. If they do not want this, they could either support us or go in for fresh elections all over again. After all, we had passed the "examination" with a poor third class. How could we demand support? But I made it clear to them that if they decided to support us, there would be no riders.

Q. But how long will such a fragile arrangement last?

A. It is for them to decide. It is the compulsion of realpolitik that has forced them to support us. I have already warned Mulayam that we have so far the support of the leaders only and not their MLAs. So let him seek a vote of confidence much before January 15, maybe by December 15 itself. We have absolutely no problems if the elections are held again and I have made it clear to Mulayam also that if he is with me then he has to stop worrying about the chair. Our aim is to provide insaaf (justice) to everyone and not occupy the chair.

Q. There is lot of speculation that you might desert Mulayam yourself.

A. I have not joined hands to desert him. There was an urgency to defeat the BJP in Uttar Pradesh and we have done this. There is a perfect understanding between us and this alliance can extend to other states as well. But I would give it about six months time before we actually do it.

Q. What kind of a role do you envisage for yourself? Are you the monitor or the king-maker?

A. I am neither. I am just a helper to Mulayam because after all he is the chief minister. I have told him that he is the one who has to deliver. I can only help him.

Q. But do you think that you could prove to be the biggest stumbling block in a possible reunion of Mulayam and the rest of the Janata Dal leaders?

A. No, if they decide to join Mulayam, I have no objections.

Q. But you have very strong feelings against most of these leaders whom you call "Brahminical forces"?

A. There is no doubt about that because people like V.P. Singh, Ajit Singh along with Maulana Bukhari have helped the BJP to ensure the BSP's defeat in western Uttar Pradesh. They have been in league with the BJP for a long time now. Murli Manohar Joshi was Singh's chief electoral agent in Allahabad when I contested against him in 1988. He along with the BMAC and the Muslim League have proved to be the biggest supporters of the BJP.

Q. Before your alliance with Mulayam, you were considered a Congress(I) stooge.

A. That again is a media manipulation. How can somebody who has masterminded the Congress(I)'s decline from 350 seats in 1989 to just 28 seats in 1993 in Uttar Pradesh be called a Congress(I) agent? And when I say that the Congress(I) is the "A" team of the Brahminical order followed by the BJP which is the "B" team - the Janata Dal being the "C" team, the CPI(M) the "D" team and the CPI the "E" team - will any of them like to have any connections with me?

Q. But how do you gain by calling all of them names?

A. My strategy is simple. I do not want a stable government. If the Government, whether at the Centre or in a state is stable, the BSP is weak and if the Government is unstable, the BSP emerges stronger. We have ensured a hung assembly to make the BSP stronger. Like Rao says that the BJP is down and not out which means he wants the BJP out. But I do not want it. They should remain down and not out for tactical reasons. If the BJP is out, the Congress(I) emerges as the winner. Similarly the BJP wanted the Congress(I) ousted from Uttar Pradesh. I did not want it so. I asked my people to attend the Congress(I) rallies to bolster the party's morale. I also told my supporters not to make any attacks against the Congress(I). My theory was that if the Congress(I) gets more seats than the Janata Dal, the BJP will lose automatically and thereby pave the way for the SP-BSP combine. In the other case, if the Janata Dal had got more seats than the Congress(I), we would have lost to the BJP. That is why V.P. Singh and Ajit Singh were being supported by the BJP and I decided to favour the Congress(I). It was like two matches being played simultaneously - one a final between the SP-BSP and the BJP and the other a semi-final between the Congress(I) and the Janata Dal. I want that they - the Congress(I) and BJP and all the other Brahminical parties - should keep fighting and destroying each other. For the time being they can all combine to give an unstable government which suits the BSP because langari ghori ko tangari maarnaa aasaan hotaa hai (it is easy to make a lame pony trip).

Q. But what is the strategy behind blaming everything on the Brahminical order?

A. That is not a strategy. It is the mission of my life. The Brahminical social order is like this dot pen (he holds up his ballpoint) held vertically with the Brahmins, Kshatriyas and Vaishyas dominating the top. The rest is dominated by the Shudras, the Ati-Shudras (lowest castes) and the Bahujan Samaj. And see the manipulation of the Brahaminical order. The Shudras and Ati-Shudras are further divided into 6,000 castes. It is time this pen is held horizontally.

Q. But how will this happen?

A. It is quite simple. When this majority of Shudras and Ati-Shudras collectively launches this crusade, the rest of the people have to do one simple thing - drop their tails (their surnames). Kanshi Ram has dropped his tail and his eyes are set on the tails of others. A Singh or a Prasad or a Ram does not tell you anything about a person's caste. Like you were questioning me about my caste and you still keep making all kinds of guesses. But, on the other hand, a Joshi, Advani, Vajpayee or Singhal all carry tails of their castes.

Q. Does Mulayam Singh Yadav too have a tail?

A. He is changing after he came in touch with me.

Q. But in what way do these tails bother your electorate?

A. They are the ones who have suffered because of these tails. I realised this way back in 1965 when I was working as a scientist in the explosive section at the Defence Research Laboratory in Pune. I had read Dr Ambedkar's book Annihilation of Castes. I decided to take over Dr Ambedkar's unfinished mission. After 108 years of struggle the Shudras and the Ati-Shudras have come out of the dark age to this chamcha age. The Bahujan Samaj is dependent on others. They work and spin money for others. I want a social transformation now. These chamaars buy shoes worth Rs.100 crore per year which they themselves make. But the Banias eat the profits. I want them to be independent.

Q. Is this how you have made political inroads amongst them?

A. I have been able to do it because I don't offer any promises. I do not tell them that I will get them jobs or make them richer. I just tell them that I can ensure one little thing for the chamaars - and that is make them the rulers of this country. I tell them to have faith in me and that is all I say.

Q. But don't you think that you will make the upper castes panicky?

A. Their guilt makes them panicky more than anything else. They should accept the horizontal social order before it is too late.

Q. Where do you get your money from? It is often rumoured that you are funded by influential businessmen such as Jayant Malhotra.

A. There is no need for this because I have planned for all this much in advance. I have organised three in-built generators to take care of everything. The first one is a think-tank, the second one a group of talented people and the third a fund-raising squad. I can raise crores of rupees whenever I want. In the villages it is not Jai Shri Ram any more. Now you can just say Jai Kanshi Ram and get as much money as you want. In the coming days, if you want to give me money, you will have to stand in a three-mile-long queue. Besides, the Bahujan Samaj, regardless of its poverty, eats food worth Rs.300 crore per day. If they keep hungry for just one day, we save that much money. Money is not our problem any more.

विशेष जानकारी

सभी आंदोलनो की पुरानी गलतियों से सबक लेते हुए साहब ने 6 दिसंबर 1978 को BAMCEF(Backward and Minority Community Employee Federation) नाम की संस्था को जन्म दिया. इसका मुख्य मकसद ST, SC, OBC और Minority के सरकारी कर्मचारीयों को एकजुट कर, इनकी गैर राजनीतिक जड़ों को मज़बूत करना था. अपनी जी-तोड़ मेहनत और करिश्माई व्यक्तित्व से जल्द ही साहब ने पुरे उत्तर भारत में इसे एक बहुत ही मज़बूत संगठन के तौर पर उभार दिया. इसके बाद उन्हें इस बात का अहसास हुआ कि अगर हमें सामाजिक परिवर्तन करना है, तो उसके लिए ताक़त पैदा करनी होगी. इसके लिए संघर्ष करना ज़रूरी था क्योंकि BAMCEF के सदस्य सरकारी कर्मचारी थे, इसलिए वो सरकार के खिलाफ संघर्ष नहीं कर सकते थे. गैर सरकारी कर्मचारियों को संघर्ष में उतारने के लिये उन्होंने 6 दिसंबर 1981 को DS-4 (दलित शोषित समाज संघर्ष समिति) बनाई. इसके बाद से साहब कांशी राम ने एक ऐसा संघर्ष शुरू किया, जिसकी यादें आज भी कई दशकों बाद लोगों के दिलों-दिमाग में ज़िंदा है. क्योंकि बहुजन समाज (ST, SC, OBC और Minority) के लोग आर्थिक तौर पर गरीब थे, उन्होंने साइकिल पर संघर्ष करने का अनूठा प्रोग्राम बनाया. एक ऐसे नेता का नेतृत्व पाकर, जो देश में जातिवादी व्यवस्था को खत्म कर एक मानवतावादी व्यवस्था बनाने के लिए अपना घर-परिवार सब कुछ न्योछावर कर चुका था, पूरा बहुजन समाज साइकिलों पर सवार होकर उनके साथ निकल पड़ा. कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और गुजरात से लेकर दूर नागालैंड तक हज़ारों मील का सफर बहुजन समाज के लोगों ने किया. कुछ सालों में ही लगभग ख़त्म हो चुकी फूले-शाहू-अम्बेडकर की विचारधारा, फिर से एक बड़ी लहर का रूप धारण कर गई. नीला झंडा और साहब के दिये हुए जोशीले नारों ने अब तक बहुजन समाज को अपना गुलाम समझ बैठे मनुवादी हुक्मरानों का तख्ता हिला दिया.

1978 से 1984 तक साहब कांशी राम ने रिकॉर्ड तोड़ मेहनत करके हज़ारों मील साइकिल पर यात्राएं, सैकड़ों सभाएं, नुक्कड़ नाटक, धरने प्रदर्शनों से जैसे बहुजन समाज को नींद से जगा डाला. BAMCEF के ज़रिये पहले गैर राजनीतिक जड़ों को मज़बूत करने और फिर DS-4 के ज़रिये बेमिसाल संघर्ष करने के बाद, जब उन्हें लगा की अब यह समाज राजनीति में कदम रखने के लिए तैयार हो चूका है, तो उन्होंने 14 अप्रैल 1984 को बाबासाहब के जन्मदिन पर बहुजन समाज पार्टी की बुनियाद रखी. अपने पहले ही कुछ सालों में इसके नतीजों ने बड़े-बड़े राजनीतिक विशेलषकों को हैरान कर दिया. 1985 को जब पंजाब में विधान सभा चुनाव हुए, तो अब तक सत्ता में बदस्तूर बनी कांग्रेस पार्टी उनकी वजह से धाराशाई हो गई. उनके उम्मीदवार खुद तो नहीं जीत सके, लेकिन उन्होंने कांग्रेस को यह अहसास करवा दिया कि अनुसूचित जातियों के वोट पर एक-छत्र राज करने का उसका ज़माना लद चुका है. जब 1989 में उत्तर प्रदेश के विधान सभा चुनाव और देश में लोक सभा चुनाव हुए, तो साहब के नेतृत्व में इस काफिले ने चुनावी सफलता हासिल करके राजनीति में धमाकेदार एंट्री की. उत्तर प्रदेश से कई विधायक और दो MP और पंजाब से एक MP जीतकर दिल्ली पहुँचे.

इस तरह साहब कांशी राम ने राजनीति में कदम रखने के कुछ ही सालों में जीत हासिल कर महाराष्ट्र के उन RPI नेताओं, जिन्होंने उन्हें "होउ शकत नाही" कहा था, को गलत साबित कर दिखाया. उन्होंने अपने मशहूर वाक्य कि

"अगर तमन्ना सच्ची हो तो हज़ारों रास्ते निकल आते हैं,

अगर तमन्ना झूठी हो तो हज़ारों बहाने निकल आते है"

को हक़ीक़त में बदल डाला. अब तक कांग्रेस पार्टी पुरे देश में, उसमें भी खासकर उत्तर भारत में शेडयूल्ड कास्ट और मुसलमानों के वोटों पर राज करती आ रही थी. साहब के मैदान में उतरते ही SC उससे किनारा कर गए और कांग्रेस की उलटी गिनती शुरू हो गयी. पिछड़ी जातियों को उनका आरक्षण दिलाने के लिए आई मंडल कमीशन की रिपोर्ट को लागू करवाने के लिए भी साहब ने बड़ा आंदोलन छेड़ दिया. पहले ही अनुसूचित जातियों को अपने साथ जोड़ चुके इस करिश्माई नेता से घबराये मनुवादी नेताओं को अब पिछड़ी जातियों के भी उनके पाले में जाने का डर सताने लगा.

पिछड़ों का इससे ध्यान हटाने के लिए, जब 6 दिसंबर 1992 को बाबासाहब के परिनिर्वाण के दिन RSS-BJP ने बाबरी मस्जिद को ढहाया, तो पुरे उत्तर प्रदेश और भारत की राजनीति में उथल-पुथल मच गयी. मुलायम सिंह उत्तर प्रदेश में समाजवादी आंदोलन के नेता के तौर पर उभर चुके थे, यादवों और मुसलमानों का भारी समर्थन उन्हें प्राप्त था. लेकिन ब्राह्मण-बनिया-ठाकुर और काफी पिछड़ी जातियों को अपनी तरफ खींचने में कामयाब हो चुकी RSS BJP को रोकने के लिए, उन्होंने साहब कांशी राम से मदद मांगी. इस तरह साहब कांशी राम उत्तर प्रदेश और पुरे भारत की राजनीति का केंद्र बन गए. उन्होंने मुलायम सिंह यादव के साथ न सिर्फ चुनावी गठजोड़ किया बल्कि 1993 के चुनावों में **"मिले मुलायम कांशी राम, हवा हो गए जय श्री राम"** के ऐतिहासिक नारे से RSS को चारों खाने चित्त कर दिया. इस तरह 1984 से शुरू करके 1993 तक सिर्फ 9 सालों में वो राजनीतिक शीर्ष पर पहुँच गए और साइकिल पर चला बहुजन समाज का काफिला सत्ता तक जा पहुँचा.

राजनीति के धुरंधरों ने भी इस बात को माना कि अब उत्तर प्रदेश में सत्ता में कौन आएगा और कौन जायेगा, इसका फैसला कांशी राम के ही हाथों में है. 1995 में उन्होंने मायावती को मुख्यमंत्री बनाकर पहली बार देश में फूले-शाहू-अम्बेडकर के विचारों पर चलने वाली सरकार बनाई और महाराष्ट्र के RPI नेताओं की "होउ शकत नाही" की लहर के जवाब में "होउ शकत है" की लहर खड़ी कर दी. अगले साल 1996 में लोक सभा चुनाव हुए तो साहब ने इसे BSP को राष्ट्रिय पार्टी के तौर पर मान्यता दिलाने के इरादे से लड़ा और इसमें भी कामयाब होते हुए जम्मू-कश्मीर, पंजाब, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में मान्यता प्राप्त कर, BSP को राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा दिलाया. ग्यारह MP चुनकर दिल्ली पहुँचे, तीन पंजाब से, जिसमें साहब खुद होशियारपुर से; छह उत्तर प्रदेश से और दो मध्य प्रदेश से.

साहब की रणनीति थी कि जब तक हम खुद बहुमत की सरकार नहीं बनाते हैं तब तक हम किसी और को भी बहुमत की सरकार नहीं बनाने देंगे. इसके लिए पहले उन्होंने उत्तर प्रदेश में राजनीतिक अस्थिरता पैदा की और अब तक एक-छत्र राज करती आ रही कांग्रेस को सत्ता से बाहर किया और ऐसे हालत पैदा किये की उनकी मर्जी के बगैर कोई भी सरकार न बना सके. इसके बाद उन्होंने पुरे देश की राजनीति को भी हिला दिया और किसी भी पार्टी की बहुमत वाली केंद्रीय सरकारों का ज़माना लद गया. उन्होंने साफ कहा कि जब तक बहुजन समाज खुद मज़बूत सरकार बनाने की स्थिति में नहीं आता, तब तक हम मनुवादी पार्टियों की मज़बूर सरकारें ही बनने देंगे. 1996 के बाद 1998 और फिर 1999 में लोक सभा चुनाव हुए और देश में उनके कारण राजनीतिक अस्थिरता बनी रही. 1996 में बसपा को राष्ट्रिय पार्टी की मान्यता दिलवाने के बाद 1999 तक वो इसे देश की तीसरी सबसे बड़ी राष्ट्रिय पार्टी बनाने में भी कामयाब हुए.

हालांकि 1999 में भाजपा सरकार बनाने में कामयाब हुई, लेकिन उसे इसके लिए ढेरों पार्टियों का सहारा लेना पड़ा. साहब ने 2004 में होने वाले चुनावों लोक सभा को निशाना मानकर मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और दक्षिण भारत का रुख किया ताकि उत्तर भारत के साथ दक्षिण भारत को भी मज़बूत कर बड़ा राजनीतिक फेर बदल किया जा सके. जिस तरह उत्तर प्रदेश में सत्ता की चाबी 1993 से उनके हाथों में आ चुकी थी, अब 2004 में देश की सत्ता को भी वो बहुजन समाज के हाथों सौपने वाले थे. लेकिन बदकिस्मती से सितम्बर 2003 को रेल से हैदराबाद जाते समय, उन्हें दिमाग का दौरा पड़ा और उसके बाद वो बीमार ही रहे. 9 अक्टूबर 2006 को फूले-शाहू-अम्बेडकर के आंदोलन को पुरे देश में फ़ैलाने वाला यह शख्स शारीरिक तौर पर हम सबको अलविदा कह गया.

उनके जाने से हज़ारों सालों से भारत में चली आ रही ब्राह्मणवादी व्यवस्था को बदल कर बहुजन समाज सत्ता में पहुँचने के काफी करीब तक पहुँच गया, लेकिन ऐन वक़्त पर उनके बीमार पड़ जाने की वजह से उसे हासिल नहीं कर पाया. उल्टा उसके बाद से भारत में ब्राह्मणवादी ताक़तें लगातार मज़बूत होती चली गयी और आज बाबासाहब का मानवतावादी संविधान; जिसे उन्होंने इतनी मेहनत से बनाया और पुरे बहुजन समाज को उनके अधिकार दिए, खतरे में है. आज साहब कांशी राम के जीवन संघर्ष से प्रेरणा लेने की ज़रूरत है ताकि हम यह समझ सके कि जिस आंदोलन को उन्होंने फर्श से अर्श तक पहुँचाया, वो फिर से उन्ही बुंलदियों को कैसे छू सके और फूले-शाहू-अम्बेडकर की विचारधारा का फिर से देश में बोलबाला हो.

साहब कांशी राम के 84वें जन्मोत्सव, जिसे हर साल बहुजन समाज दिवस के रूप में मनाया जाता है, पर देश और विदेशों में रहते बहुजन समाज को बहुत-बहुत बधाई.

जय भीम, जय कांशी राम, जय भारत

(Collected from various sources and compiled for Circulation to spread awareness among Bahujans, SC ST OBC and Minority people of India.)

Follow on Twitter : @TheVishalSonara
@ItsBlueDiary , @JoinBlueArmy